①

Psychology DII (H), [III rd paper
Lecture No - 12

Date 18.4.20

Dr. (Mrs) Kumari Kanta
Associate professor
Marwari College, DBG

Topic — द्विध्रुवीय विकृति : उत्साह विषाद
(Bipolar disorder; Manic Depressive)

— Manic depressive अर्थात bipolar disorder वास्तव में mood disorder का एक महत्वपूर्ण प्रकार है। यह द्विविमात्मक विकृति (two dimensional disorder) है। इस विकृति की एक दिशा उत्साह (mania) है और दूसरी दिशा विषाद (depression) है। दोनों में कभी उत्साह दिशा और कभी विषाद दिशा सक्रिय दीख पड़ती है। उत्साह प्रधान होता है तो विषाद गौण हो जाता है और जब विषाद प्रधान होता है तो उत्साह गौण हो जाता है।

लक्षण (Symptoms) :— द्विध्रुवीय विकृति (Bipolar disorder अर्थात उत्साह विषाद विकृति (manic depressive disorder) के लक्षणों को निम्नांकित तीन वर्गों में बांटा जा सकता है :—

1) उन्मादी व्यवहार (Manic behaviour) :- इस मानसिक रोग से पीड़ित व्यक्ति के व्यवहार में उन्माद या उत्साह (mania) की प्रधानता होती है। उसके व्यवहार में उत्साह, आनंद, बेचैनी, विचारों के उड़ान, अधिक आत्मोह आदि लक्षण सामान्य रूप में पाए जाते हैं। रोगी अत्यधिक सक्रिय (Overactive) रहता है, थकता नहीं है, सोता कम है और यौन के प्रति अधिक सक्रिय बना रहता है। इस तरह के उत्साही या उन्मादी व्यवहार कुछ समय के बाद विषादी व्यवहार में बदल जाते हैं।

2) विषादी व्यवहार (Depressive behaviour) :-
द्विध्रुवीय विकृति के दूसरे पक्ष अथवा dimension को विषाद (depression) कहते हैं। उत्साह की स्थिति लुप्त होने के बाद विषाद की स्थिति प्रकट होती है। रोगी के व्यवहारों में उदासीनता, निराशा, सामाजिक अलगाव, चिड़चिड़ापन आदि लक्षण देखे जाते हैं। इसी तरह रोगी में शारीरिक क्रिया घट जाती है। वह थका थका सा शरीर महसूस करता है। भोजन एवं नींद कमजोर हो जाता है, नकारात्मक प्रवृत्ति बढ़ जाती है। आत्मनिन्दा (self blame) का भाव बढ़ जाता है। रोगी मन से सम्बन्ध व्यामोह भी विकसित हो जाते हैं।

3) विशिष्ट लक्षण (specific symptoms) :-
द्विध्रुवीय विकृति के रोगी में तीन तरह के विशिष्ट लक्षण देखे जाते हैं। इन्हें साइक्लोथाइमिक विकृति (cyclothymic disorder), द्विध्रुवीय-I विकृति (bipolar-I disorder) तथा द्विध्रुवीय-II विकृति (bipolar-II disorder) कहते हैं। cyclothymic disorder depression की एक chronic state है। द्विध्रुवीय-I विकृति की स्थिति में विषादी घटना (depressive episode) के साथ उन्मादी घटना (manic episode) भी घटती है। द्विध्रुवीय II की विकृति में विषाद के साथ-साथ एक अवोन्मादी घटना (hypomanic episode) घटित होती है।

कारण (Etiology or causes)

1) जननिक कारक (Genetic factor) :- अध्ययनों से पता चलता है कि यह विकृति बहुत अंशों में वंशागत है। नीलेल आदि (1993) ने अपने अध्ययन में

Date

पाया कि इस मानसिक रोग से पीड़ित व्यक्ति के माता - पिता अथवा संबंधों में भी यह रोग था। जुड़वां बच्चों पर किए गए अध्ययनों से भी इस मानसिक रोग के वंशागत होने का प्रमाण मिलता है। इसीतरह दत्तकों (adoptees) पर किए गए अध्ययनों के परिणामों से भी इस रोग के विकास में आनुवंशिकता की भूमिका सिद्ध होती है।

2) दैहिक अस्थिरता (Physiological instability) :— द्विध्रुवीय विकृति के विकास में शारीरिक या दैहिक अस्थिरता का भी हाथ होता है। न्यूरोट्रांसमीटर के स्तर के बढ़ने से उन्मादी घटना (manic episode) जुड़ती है। इसीतरह उत्तेजना (stimulation) के प्रति अधिक संवेदनशील बन जाने पर उत्साह पक्ष (manic aspect) सक्रिय हो जाता है जबकि निम्न संवेदनशील होने पर विषाद पक्ष प्रधान बन जाता है।

3) प्रतिबलक (Stressor) :— आधुनिक अनुसंधानों से पता चलता है कि उत्साह - विषाद अर्थात् द्विध्रुवीय विकृति का कारण विभिन्न कारणों से उत्पन्न प्रतिबल (Stress) है। पारिवारिक तथा सामाजिक परिस्थितियों के तनावपूर्ण होने के कारण इस रोग के विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है। Bipolar disorder से पीड़ित माता - पिता के बच्चों में इस रोग में विकसित होने की संभावना अधिक होती है, क्योंकि वातावरण प्रतिबलक (Stressor) का काम करता है।

Treatment (उपचार)

द्विध्रुवीय विकृति (bipolar disorder) अथवा उत्साह विषाद विकृति (manic depressive disorder) के उपचार के लिए लिथियम चिकित्सा (Lithium therapy),

डाइवल प्रोएक्स चिकित्सा (dival proextherapy), तथा विद्युत कनवल्सिव चिकित्सा (electroconvulsive therapy) तथा सहायता चिकित्सा (Supportive therapy) का उपयोग किया जाता है।

लीथियम वास्तव में मनोविकृति विरोधी औषध (Anti-psychotic drug) है, जिसके उपयोग से विशेष रूप से रोगी को उत्साह पक्ष के उपचार में अधिक लाभ होता है। इसी तरह डाइवलप्रोएक्स भी एक औषध है जिसके उपयोग से विशेष रूप से विषादी पक्ष के उपचार में अधिक लाभ होता है। इसी तरह विषाद पक्ष के उपचार में विद्युत आक्षेपकी चिकित्सा से लाभ होता है।

अतः आवश्यकता के अनुसार उपर्युक्त चिकित्सा विधियों का उपयोग द्विध्रुवीय विकृति के रोगी के उपचार में किया जाता है।

—×—

Dr. Kumari Kanta
Psychology Dept.
Marwari College, DBG.
Mob - 7294039693